अब घर जाना है - इस मन्त्र की स्मृति से अब उपराम बनो

आज सतगुरुवार के दिन मीठे बाबा के साथ-साथ प्यारी दीदी का भी यादप्यार लेकर जब बाबा के पास पहुँची तो देखा, जैसे साकार में दीदी बाबा के पास गद्दी पर बैठकर रूहरिहान करती थी, ऐसे ही बाबा के साथ वतन में बैठी थी। दीदी के चेहरे से ऐसे लग रहा था जैसेकि वह बाबा से कुछ पूछ रही हैं। जैसे ही मैं नजदीक जाकर पहुँची तो बाबा भी मुस्कराये, दीदी भी मुस्कराई। मैंने पूछा दीदी आप क्या बात कर रही थी ? तो दीदी ने कहा बाबा से पूछो। बाबा ने कहा दीदी से ही पूछो। तो दीदी बोली – मैं बाबा से पूछ रही थी कि हमारा आपस में मिलन कब करायेंगे ? एडवांस पार्टी और यह पार्टी कब आपस में मिलेगी ? बाबा, कितना दिन और इन्तजार करना पड़ेगा ? अभी तो वतन में ही मिलते हैं। लेकिन प्रैक्टिकल में हम कब मिलेंगे ? वह दिन कब आयेगा ? तो बाबा मुस्कराता था। बाबा ने कहा – बच्चे तुम तैयार हो ? हमने कहा – बाबा, हम ड्रामाप्लैन अनुसार तो तैयार हैं। तो बाबा ने कहा – जैसे एडवांस पार्टी तीव्र पुरुषार्थ कर रही है, वैसे आप लोग पुरुषार्थ कर रहे हो कि हम भी कुछ

करें। देखने में आता है कि बच्चे समय का इन्तजार कर रहे हैं। सोचते हैं कि समय आवे और बाबा ले चले और बाबा कहता है – बच्चे, रेडी बनो तो मैं बच्चों को ले चलूँ। मैंने पूछा – बाबा, आप क्या चाहते हैं? किसमें रेडी होना है? तो बाबा ने कहा दादी से पूछना। मैंने कहा बाबा हम तो अभी आपके पास आये हैं, आपसे पूछ रहे हैं। तो बाबा ने दीदी को कहा कि दीदी आप बताओ। तो दीदी कहे बाबा यह तो आप जानो, नीचे वाले जानो। बाबा तो जवाब के समय मुस्करा देता है। कहता है धीरज रखो। तो दीदी ने कहा कि बाबा कहता है तो ज़रूर कोई कमी होगी। मैंने कहा दीदी, आपकी पालना लिये हुए बहुत बच्चे आये हैं, आपकी पालना ली हुई है। आप कोई सन्देश दो तो दीदी बोली कि पालना की तो रिज़ल्ट देनी होती है। जैसे बाबा कहे वैसे बनकर दिखायें तब कहेंगे बाबा की पालना का रिटर्न दे रहे हैं। दीदी ने कहा– मुझे लगता है कि अभी तक गम्भीरता से सब पुरुषार्थ नहीं कर रहे हैं। सोचते हैं, हो जायेगा। परन्तु बाबा कहता है सब तरफ से संगठित रूप में चारों तरफ घेराव डालो तब प्रत्यक्षता हो।

अपने अन्दर की लगन आवे, चिंता लग जावे कि मुझे यह करना ही है तो पुरुषार्थ की रफ्तार अपने आप बढ़ेगी। कहने से नहीं। अपनी लगन चाहिए। प्रोग्राम से कोई पुरुषार्थ करता है तो जितने दिन का प्रोग्राम उतने दिन का पुरुषार्थ, फिर वैसे का वैसे हो जाता है। प्रोग्राम से प्रोग्रेस नहीं होगी। अपने दिल की लगन से, चिंतन से, चिंता से पुरुषार्थ में तीव्रता आयेगी। दूसरे भी महसूस करेंगे तो उन्हें भी प्रेरणा मिलेगी। अभी यह ट्राई करके देखो।

फिर बाबा ने कहा – मैं तो बच्चों को सम्पन्न बनने की भिन्न-भिन्न युक्तियां देता रहता हूँ, अभी बच्चों का काम है अटेन्शन देकर चलना। परन्तु बच्चे अटेन्शन कम देते हैं। जब मैजारटी का पुरुषार्थ उमंग-उत्साह, तीव्रता वाला होगा तो उन्हें देखकर दूसरे भी पुरुषार्थ करेगे। पुरुषार्थ तो बच्चे कर रहे हैं लेकिन जो बाबा चाहता है, उस अनुसार स्वयं को समर्थ नहीं बनाया है। अभी तक बच्चों का व्यर्थ बहुत चलता है। जब तक व्यर्थ को समर्थ नहीं बनाया है तब तक पुरुषार्थ आगे नहीं बढ़ेगा। व्यर्थ के कारण बच्चे कई प्रकार की भूलें करते रहते हैं। भूले करने के बाद फिर इतने निराश,

हताश हो जाते हैं, जो चाहते हुए भी फिर पुरुषार्थ नहीं कर पाते। बाबा तो शुभ भावना, शुभ कामना रखता है, सकाश देता है, हिम्मत देता है, लेकिन बच्चे उसे ग्रहण करें, यह बच्चों पर डिपेन्ड करता है। फिर दीदी ने कहा कि अभी मुझे दादी का बहुत ख्याल आता है, दादी अकेली है। मैंने कहा दादी को भी दीदी आप बहुत याद आती हो। आपकी पालना, आपकी शिक्षायें हर एक को याद आती हैं। तो जैसे दीदी कहीं ख्यालों में उड़ गई। बाबा दीदी को बहुत पावरफुल सकाश दे रहा था। फिर बाबा ने कहा– बच्ची, तुम तो दीदी के लिए भोग लेकर आई थी। तो बाबा ने दीदी को लाइट दी और कहा – पहले दीदी को भोग खिलाओ। तो दीदी ने कहा, नहीं बाबा को खिलाओ। फिर बाबा ने दीदी को, दीदी ने बाबा को भोग खिलाया। फिर बाबा ने कहा अच्छा सभी को मेरी विशेष याद देना और कहना कि समय को देखते हुए स्वयं को सम्पन्न बनाने का पुरुषार्थ करो, यही बाबा की भावना है। फिर दीदी से मैंने कहा कि आप भी कोई सन्देश दो। तो दीदी ने कहा कि सभी को कहना कि अन्त का जो मन्त्र है – ''अब घर जाना है''। यह मन्त्र अगर सभी याद रखें तो वृत्ति अपने आप उपराम हो जायेगी। बाबा अपने आप याद आयेगा। समेटने की शक्ति भी आ जायेगी। अब घर जाना है, यह अन्त का मन्त्र है। यही मन्त्र अब अन्त के समय सभी को पक्का करना है। ऐसे कहते दीदी और बाबा से मिलते मैं अपने वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।